जामई कौन?

ग़िज़ाल मैहदी

शीर्षक में दिए गए सवाल का आसान जवाब तो यह हो सकता है कि हर वो व्यक्ति जामई है जिसने जामिया मिल्लिया इस्लामिया में शिक्षा ग्रहण की हो, या नौकरी की हो, मगर एक जामई की बेहतरीन पहचान शायद यह हो सकती है कि वह जामिया के शुरूआती निर्माताओं और विद्यार्थियों की विरासत का झंडा लेकर आगे बढ़ता हो और सामूहिक रूप से इस विरासत को बढ़ावा देता हो। ये जामिया के निर्माता और विद्यार्थी ही हैं जिन्होंने जामिया के संस्थापकों और हमदर्दों के सपनों और आदर्शों को साकार किया।

निःसन्देह जामिया एक शैक्षिक संस्था थी और है, इसलिए शिक्षा के महत्व पर ज़ोर देना एक फितरी अमल है लेकिन एक बहुत अहम सवाल यह है कि जामिया हिन्दुस्तान की दूसरे शैक्षिक संस्थाओं से किस प्रकार अलग और विशेष है? दूसरी शैक्षिक संस्थाओं के विपरीत जामिया का जन्म शिक्षा के क्षेत्र में एक विद्रोह का परिणाम है, जो 1857 ई0 के स्वतंत्रता संग्राम से किसी भी प्रकार कम महत्वपूर्ण नहीं था, बल्कि ये शैक्षिक विद्रोह इससे अधिक सफल था। यह शैक्षिक विद्रोह उन शक्तियों के विरोध में था जो समाज में सकारात्मक बदलाव के विरूद्ध थीं। यह शैक्षिक विद्रोह असल में सामूहिक निर्माण और प्रगति का संघर्ष था, जिसका उद्देश्य था कि शिक्षा को दैनिक जीवन में शामिल किया जाए और जीवन के अंतिम क्षण तक एक बेहतर समाज के निर्माण के संघर्ष को जारी रखा जाए। इस शिक्षा का उद्देश्य था कि छात्र आस–पास की बस्तियों में रहने वालों से सम्बंध बनायें, शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाएँ और उनकी शिक्षा देश की आज़ादी के संघर्ष और अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के दृष्टिकोण से हो।

जामिया का संघर्ष 1920 के दशक में उस समय की उत्पादक शक्तियों के स्तर और उपलब्ध संसाधनों की रोशनी में एक क्रांतिकारी और अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष था, लेकिन इसके साथ–साथ इस संघर्ष की जड़ें इन्सान दोस्ती पर आधारित राष्ट्रीय संस्कृति में बंधी थीं।

इस बातचीत में शिक्षा से सम्बन्धित तीन सवाल महत्वपूर्ण हैं :

1 शिक्षा का उद्देश्य क्या है ?

2 शिक्षा का माध्यम क्या होना चाहिए ?

3 पाठ्यक्रम में क्या–क्या शामिल किया जाना चाहिए?

शिक्षा का उद्देश्यः

जामिया की स्थापना, हिन्दुस्तान के स्वतन्त्रता संग्राम के लीडरों की ललकार का नतीजा थी, जिसका नेतृत्व राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी कर रहे थे। इस तथ्य से साफ तौर पर पता चलता है कि जामिया की शिक्षा का उद्देश्य भी स्वतन्त्रता संग्राम के उद्देश्यों के अनुरूप था। दूसरे शब्दों में जामिया का मार्ग प्रगतिशील था और यहाँ शिक्षा का अर्थ यथासम्भव व्यापक था, यहाँ की शिक्षा जनता के जीवन से अटूट रिश्ता रखती थी।

यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि उस समय जबकि जामिया को चलाने का कोई आश्वासित ज़रिया नहीं था, इसके बावजूद लोगों के एक समूह ने जिसमें शिक्षक, छात्र और हर प्रकार के कार्यकर्ता शामिल थे, उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी को तिलांजलि देकर जामिया की स्थापना की। इसका अर्थ यह हुआ कि इन बहादुर लोगों ने समाज के व्यापक हितों के लिए व्यक्तिगत बलिदान दिया। इसी विरासत और परम्परा को एक लम्बे समय तक जामई पीढ़ियों ने काफी हद तक बनाए रखा।

जामिया के निर्माता शिक्षा को एक अच्छी नौकरी हासिल करने का माध्यम नहीं समझते थे बल्कि वे शिक्षा को सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीवन के लिए जरूरी समझते थे। एक ऐसा जीवन जो पूरी सोच–समझ के साथ एक ऐसे समाज की स्थापना के लिए कार्यरत हो, जहाँ सामूहिक भलाई को निजी हितों पर प्राथमिकता हासिल हो।

मेरे विचार में जामिया की शिक्षा का अर्थ और उद्देश्य 'जामिया का तराना' बेहतर तौर से दर्शाता है। हमारे जीवन का हर पहलू वैचारिक और व्यावहारिक दोनों स्तर पर एक सा होना चाहिए। मेरी समझ के अनुसार महान् कवि ग़ालिब की प्रतिमा जामिया के हरे–भेर आँगन में इसलिए स्थापित की गई है क्योंकि ग़ालिब की उर्दू शायरी जामिया के मूल उद्देश्यों को प्रतिबिंबित करती है।

अज्ञानता, भेदभाव, असमानता संक्षेप में हर वह तत्व जो जनता के बीच खाई पैदा करता है और प्रगति के मार्ग में रूकावट बनता है, उस सबके विरूद्ध निरन्तर संघर्ष शिक्षा का मूल उद्देश्य है। शिक्षा को सामाजिक विरोधाभासों और असमानता में कमी लाने में सहायक होना चाहिए।

जामिया और जामिया के मूल उद्देश्यों को बढ़ावा देने के सामूहिक संघर्ष में क्षेत्रवाद, धर्म, सम्प्रदाय, जाति, आर्थिक स्थिति, पक्षपात तथा अन्य सभी सामाजिक विभाजनकारी तत्व पीछे चले

जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप समानता, इंसाफ और सामाजिक सद्भाव हमारी मार्गदर्शक नीतियों का अटूट अंग बन जाते हैं।

जीवन का एक समग्र दृष्टिकोण जामई को नम्र मिज़ाज, दयालु, नेक नीयत, मेहनती और दर्दमन्द इन्सान बनाता है और उसके कट्टर वैचारिक आलोचक भी उसके चरित्र, साख, जोश, उत्साह और समाज के पिछड़े व मज़लूम तबकों के लिए उसकी सहानुभूति और सवेंदनशीलता को स्वीकार करते हैं और इसका आदर करते हैं क्योंकि जामई का अच्छा व्यवहार, मित्रता और प्रेम सिर्फ जामई की हद तक सीमित नहीं होता बल्कि हर इंसान के साथ होता है।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कैम्पस में ग़ालिब की जो प्रतिमा स्थापित है, उसके नीचे जो शेर लिख है उसके दूसरे मिसरे के साथ, मैं शिक्षा के उद्देश्य पर अपनी चर्चा का अन्त करना चाहूँगा

किसका दिल हूँ कि दो–आलम से लगाया है मुझे

शिक्षा का माध्यमः

स्कूल में मातृभाषा के द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए, क्योंकि बच्चे के व्यक्तित्व के विकास के लिए यह ही सबसे बेहतर तरीक़ा है। आधुनिक युग में जहाँ प्रगति की तीव्र गति के कारण विशेष शिक्षा का चलन है वहाँ भी कम से कम प्राथमिक शिक्षा तो मातृभाषा द्व ारा ही दी जानी चाहिए परन्तु वर्तमान वास्तविक स्थिति को सामने रखते हुए शिक्षा का माध्यम क्रमशः अंग्रेजी भाषा हो सकता है। कॉलेज के स्तर पर जहाँ विद्यार्थी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विशेष शिक्षा से अवगत कराने की आवश्यकता होती है वहाँ अंग्रेजी भाषा के ज़रिये शिक्षा देना बेहतर होगा।

उल्लेखनीय है कि जामिया के प्रयोग ने प्रगतिशील त्रिभाषाई फारमूले के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसमें बच्चा मातृभाषा, क्षेत्रीय/राष्ट्रीय भाषा और अंग्रेजी अर्थात् तीन भाषाएं सीखता है ।

पाठ्यक्रमः

पाठ्यक्रम का वास्तविक जीवन से सामंजस्य होना आवश्यक है और इसलिये पाठ्यक्रम को नियमित रूप से समय के साथ बदलते रहना चाहिए। हमारे 'जामिया का तराना' की निम्न पंक्तियों में भी इसका समर्थन किया गया है ....

यह बज़्मे दिल है, यहाँ की सलाए आम नई
सफ़र है दीन यहाँ, कुर्फ़ है क़याम यहाँ
यहाँ पे तश्ना लबी मैकशी का हासिल है

(यह दिलों की सभा है, यहाँ का आह्वाहन नया/भिन्न
यहाँ निरन्तर यात्रा विश्वास है और ठहराव नाजायज़
यहाँ मैकशी का नतीजा अधिकाधिक प्यास है)

जामिया के शुरूआती दौर में स्कूल के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विशेषताएँ शामिल थीं :

• विद्यार्थियों का जीवन और संस्कृति से सम्बन्ध।

• मूल्यों जैसे समय की पाबंदी, संजीदगी, जिम्मेदारी की भावना, कड़ी मेहनत, सबका आदर, सहानुभूति, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और साफ़ सुथरी ज़ेहनियत को अभ्यास द्वारा बढ़ावा देकर चरित्र निर्माण पर बल देना।

• माध्यमिक स्तर पर लकड़ी का काम, लोहे का काम, बाग़बानी, खेतीबाड़ी और सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, खाना पकाना आदि को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर शिक्षा के उद्देश्य को व्यापक अर्थ देने की कोशिश।

• छात्रों को हर तरह से योग्य बनाने की कोशिश में प्राथमिक स्तर से ही छात्रों द्वारा स्कूल की शुरूआत 'तराने' से करना। इसके अतिरिक्त खेल, नाटक, संगीत, कविता पाठ, तालीमी मेला, तालीमी सैर, एक हफ्ते का 'खुली हवा का मदरसा' और कौमी हफ्ता जो कि 'एक दिन का मदरसा' में बदल गया, एवं इस प्रकार की दूसरी गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा को आकर्षक और बहु–आयामी बनाने की कोशिश।

• प्राथमिक स्कूल की कैन्टीन, पुस्तकालय, बैंक, स्टेशनरी और पुस्तकों की दुकान और एक छोटे से चिड़ियाघर को चलाने में स्कूल के बच्चों को शामिल करना।

• सब जामई और उनके परिवारों के बीच क़रीबी संबंध पैदा करना और आस–पास की बस्तियों में रहने वालों से जान पहचान बनाकर छात्रों की सोच के दायरे को फैलाना और समाज की ओर अपनी जिम्मेदारियों के एहसास को बढ़ाना।

• सिर्फ पढ़ाने और उपरोक्त तरीक़ों से ही नहीं बल्कि दूसरी तरह से जैसे प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और सरहदी गांधी अब्दुल ग़फ्फार खान जैसे महान् मार्गदर्शकों को जामिया बुलाना और छात्रों द्वारा उनको स्कूल घुमाना, कार्यक्रम की ज़िम्मेदारी छात्रों को सौंपना या तथाकथित समप्रदायिक दंगों में अनाथ हुए बच्चों को अपनाना। यह सब छात्रों की सोच को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय बनाने में सहायक होते थे।

संक्षेप में, पाठ्यक्रम की रूप रेखा तैय्यार करने में और उसको बनाने में उपरोक्त शिक्षा के उद्देश्य मार्गदर्शक होते थे। नई सोच और सामूहिक सोच आम थी और आपसी प्यार और मौहब्बत, एक दूसरे का आदर और एक भरपूर ज़िन्दादिल और सन्तोषजनक जीवन इसका इनाम थे।

अन्त में हिन्दुस्तान के स्वतन्त्रता संग्राम के मार्गदर्शकों की ललकार पर अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से अलग होकर जामिया मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना की गई और इस प्रकार जामिया के संस्थापकों ने कठिनाईयों से भरे अन्जान रास्ते को चुना। यह बात भी स्पष्ट है कि शुरू की जामई पीढ़ियाँ और जामिया की विरासत के बेहतरीन उत्तराधिकारी कहलाये जाने योग्य लोगों ने सर्वश्रेष्ठ मानवीय गुणों का प्रदर्शन किया। इनकी कथनी और करनी में विरोधाभास नहीं था और प्रगतिशीलता, सहनशीलता, आपसी सम्मान इनके अन्दर रचे बसे थे। दूसरे शब्दों में एक जामई की बेहतरीन पहचान यह है कि वह जामिया के संस्थापकों और शुरू की जामई पीढ़ियों के सर्वश्रेष्ठ गुणों, विशेषकर इन्सान दोस्ती का अनुयायी हो और समाज के व्यापक हितों के लिए हमेशा हर कुर्बानी के लिए तैय्यार रहे, बक़ौल ग़ालिब

इश्क से तबीयत ने ज़ीस्त का मज़ा पाया
दर्द की दवा पाई, दर्दे बे दवा पाया।

अध्यक्ष
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
अलुमनाई एसोसिएशन, रियाद